अध्यक्ष कौन बनेगा ?

अब गडकरी की तस्वीरें मीडिया में आ रही हैं तो क्या गडकरी ही अध्यक्ष बनेंगे? सुषमा को यह सवाल बहुत साल रहा है। पहली बार मौका मिला है। मिला क्या, संभावना बनी थी कि यह मरदूद सामने आ खड़ा हुआ। लगता है, इसे संघ प्रमुख का संरक्षण प्राप्त है। संघ प्रमुख ने भी दिल्ली में डेरा डाल लिया है। कहते हैं, चुनाव कराकर ही जाऊंगा। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। यह भला संघ का काम है। वैसे पत्रकारों द्वारा पूछने पर कहता है कि अध्यक्ष का चुनाव पार्टी का भीतरी मामला है। तो टांग क्यों अड़ाए बैठे हो? जैसे आए वैसे ही चले जाओ। पर यह है कि मानता नहीं। मेरे नंबर को काटेगा। कहते हैं सुनने वाले कि वाजपेयी के बाद बोलने वालों, मंच लूट लेने वालों में मेरा ही नंबर आता है। पर यहां तो गडकरी-गडकरी का शोर मच रहा है जिसे कोई नहीं जानता।

हनुमान का क्या होगा ?

गडकरी अगर अध्यक्ष बने तो अपने हनुमान का क्या होगा? इस पर आडवाणी मौन हो आंखें बंद कर चिंतन-मुद्रा में चले जाते हैं। विकट है यह प्रश्न? सीता मैया को अयोध्या वापिस लाने में हनुमान के योगदान को भूला नहीं जा सकता। इनका स्थान सदैव राम के चरणों में है। पर अब? अब कहां जाएगा यह बूढ़ा वानर? गडकरी को तो यह निश्चय ही काट खाएगा। सुषमा के साथ एडजस्ट कर सकता था। दिक्कत यह है कि अब यह नेतृत्व के साथ ही रह सकता है - सत्ता पक्ष का हो या विपक्ष का। दूसरे जगह ठांव नहीं। भागवत से कहता हूं। इस परमवीर योद्धा को कोई सम्मानित स्थान प्रदान करें। सत्ता की रसमलाई और चमक-दमक इसे पसंद नहीं, न ही राजकीय साज-सज्जा। इसे तो जंगली चीजें भाती हैं। हां, प्रवक्ता का पद इसे काफी पसंद है।

अब तो बुलाओ

हां जी, बहुत धक्के खा लिए। अभी भी खा रही हूं। फिगर ज़ीरो-साइज़ नहीं तो भी पहले के मुकाबले काफ़ी फ़िट हूं। जरूर पसंद आऊंगी। अब तो बुला लो। कोई हील-हवाला नहीं करूंगी। गोविंदाचार्य को तो 'चिंतन' की बीमारी ने पकड़ लिया है। यह बीमारी जान के साथ ही जाती है। कभी मिलने आया भी हो तो काम की एक भी बात नहीं की। मुझे मुफ़्त ही सेक्सी संन्यासिन का दर्जा दिलवा दिया। उस समय जवानी की हुड़क थी। दे दिया मीडिया को बोल्ड इंटरव्यू। पर अब हे सांईं! क्लीन बोल्ड पड़ी हुई हूं। जिंदगी की तमन्नाएं पूरी करनी हैं। अभी तो कुछ नहीं हुईं। जाते-जाते घर-वापसी का जुगाड़ लगा दो। इससे देवतागण प्रसन्न होंगे और तुम पर पुष्पवर्षा करेंगे। हे कृष्ण, इस गोपी की सुधि लो। बहुत भटक चुकी हूं और थक चुकी हूं। तुझे हिया में बसा कर आंसुओं को पीती रही हूं। अब रहा नहीं जाता। कर दो घोषणा। अपना घर अपना ही होता है। आपके और हनुमान के काम आऊंगी। गडकरी के आने के पहले ही यह हो जाता.... नहीं तो फिर चांस नहीं। इससे शिवराज भी खुश होगा। अभी भी मैं उससे सहयोग की नीति पर चल रही हूं। मेरे आगे-पीछे कोई नहीं है। हे माधव! कल्याण करो, पर यह मत समझना कि मैं कल्याण हूं। 'तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित हे साईं।'

गपशप

अध्यक्ष पद के उम्मीदवार और समर्थक

जेटली जब अपने बंगले पर पहुंचे तो नेतानुमा लोगों का हुजूम उन्हें दिखाई पड़ा। उनकी भौंहों में बल पड़ गया। अभी-अभी दफ़्तर से लंच के लिए वापिस आए हैं। ये कौन हैं? बहरहाल कार से उतरकर बिना उनकी तरफ देखे फर्राटे के साथ वे अंदर चले गए और लंच करने के इंतजाम में जुट गए।

इधर बाहर भीड़ लगाए लोगों ने शोर मचाना शुरू कर दिया - हमें साहब से मिलवाओ। हम कितनी देर से खड़े हैं। पानी को भी नहीं पूछा।

क्यों नहीं पूछा - वहीं टोंटी लगी है जितना मर्जी पानी पी ले, हां फूलों-पौधों को नुकसान नहीं पहुंचाना।

कई लोग पानी पीने टोंटी की तरफ बढ़े।

इसी बीच साहब ने लंच कर लिया...कर लिया। दो-तीन आवाजें आईं। साहब ने लंच नहीं किया था। कह दिया गया कि लंच कर साहब तुम लोगों की बातें सुनेंगे।

लोग चुप हो गए और फूल-पौधों को देखने लगे। काफी समय बीत गया। अंदर कोई हलचल नहीं।

फिर किसी ने पूछा-'साहब ने लंच कर लिया?'

अंदर से किसी ने बताया-हां, लंच तो कर लिया, अब आराम करने चले गए। आराम के बाद मिलेंगे।

लोग निराश हो गए। इस बीच कई बार लोगों ने चपरासियों से विनती की। एक-दो ने चपरासी की मुट्ठी भी गरम की। मुट्ठी गरमाते ही एक चपरासी भीतर गया और जेटली साहब को साथ ले आया।

जेटली साहब ने पूछा : क्या समस्या है?

भीड़ : कोई समस्या नहीं, हम आपको अध्यक्ष पद पर देखना चाहते हैं।

जेटली मुस्कुराए : ठीक है, आप लोगों का धन्यवाद। अब आप अपने घरों को लौट जाएं।

भीड़ : ठीक है, जब आप अध्यक्ष बन जाएंगे तो रामलला का मंदिर बनेगा?

जेटली ने हंसते हुए धीरे से हां कह दिया।

और हमारे बजरंग दल के हुड़दंगी बच्चों और उनकी सरकारी नौकरी का क्या होगा? इस पर जेटली मौन धारण किए चुपचाप भीतर चले गए। भीड़ भी जिंदाबाद, जिंदाबाद करती चली गई।

बिजली न आने के फायदे

मुख्यमंत्री महोदय हर मर्ज़ की एक ही दवा जानते हैं-'घोषणा कर दो'। बिजली की समस्या से लोग परेशान हों तो घोषणा कर दो-चार साल के बाद बिजली बिना बुलाए उनके दरवाजे पर होगी। इसलिए लोगों को धैर्य के साथ इंतज़ार करना होगा। अगर वे धैर्य नहीं बनाए रखेंगे तो हम दूसरे राज्यों से ही नहीं विदेशों से बहुत महंगी बिजली खरीदकर लोगों में बांट देंगे। लेकिन इससे समस्या फिर राशन-पानी की आएगी। अनाज बहुत महंगे हो जाएंगे। पानी दोगुने-तिगुने दामों पर भी मुश्किल से मिलेगा। अभी तो कम से कम लोग सस्ता पानी खरीद कर पी रहे हैं। भूख जब जोर मारती है तो फिर पानी पी लेते हैं और कुछ देर शांत रहते हैं। इसी तरह पानी पी-पीकर वे दिन का काम निपटाते हैं, तब रात में घर जाते हैं और अंधेरे में नमक-अचार रोटी खा लेते हैं। बिजली नहीं रहने से कोई देखता नहीं और बेइज्जती से बच जाते हैं। कोई पूछे तो कह सकते हैं कि पनीर की सब्जी खाई थी। बिजली आने पर कई तरह की परेशानी होती है- बच्चों को पढ़ने के लिए कहो, पर वे उधम मचाते रहते हैं। बच्चों को डांटते-डांटते सिर दुखने लगता है। फिर बिजली आने पर टीवी, फ्रिज आदि चलने लगते हैं। इस ठंड में रूम हीटर भी चलाना पड़ता है। इससे बिजली की काफी खपत होती है और लंबा-चौड़ा बिल आता है। बिजली अधिक से अधिक देर नहीं रहेगी तो बिल भी तो कम आएगा। यह बिजली नहीं आने का सबसे बड़ा फायदा है। और भी फायदे हैं। बिजली नहीं रहने पर बच्चों से लेकर बड़े तक बिस्तर में बैठे रहते हैं, क्योंकि अंधेरे में किसी से टकरा न जाएं। इससे शांति बनी रहती है।

ये तो हद है

अपने यहां सभी संसदीय सचिव अपने आपको मुख्य संसदीय सचिव कहते हैं। मुख्य संसदीय सचिव जो चिरकुमारी हैं, अपने को मंत्री के दर्जे वाला बताती हैं। इससे जनता भ्रम में पड़ जाती है। क्या सभी 'मुख्य' हो सकते हैं? स्कूल में अध्यापक होते हैं तो उनके बीच एक मुख्य अध्यापक होता है। दफ़्तरों में कई अधिकारी होते हैं तो उनके बीच एक मुख्य अधिकारी होता है। इसी तरह क्रिकेट टीम को या फुटबॉल टीम, उनके बीच के मुख्य खिलाड़ी हो कप्तान कहा जाता है। मंत्री परिषद के प्रमुख को मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री कहा जाता है। पर संसदीय सचिव के मामले में सभी मुख्य। ये तो हद है।

व्यंग्य

पहला पुल

- हरिशंकर परसाई

लोककर्म विभाग के बाबू रामसेवक मिश्र ने एक दिन एकाएक नौकरी छोड़ दी और आठों पहर राम-चर्चा में लीन रहने लगे। लोगों ने तरह-तरह के अनुमान लगाये - कोई कहता कि रामसेवक बाबू किसी घूस के मामले में फंस गये थे, इसलिए नौकरी छोड़ कर बच निकले, कोई कहता कि ससुराल से बहुत-सा धन मिल गया, इसलिए अब कोई धंधा करेंगे। रामसेवक बाबू के होंठ, खुलते भी तो उनसे ईश्वर का नाम ही निकलता, इसलिए असली कारण क्या है, यह बहुत समय तक अज्ञात रहा।

एक दिन मैं उनके पास पहुंचा। मृग-चर्म पर पालथी मारे बैठे थे। बगल में काग़ज़ों का एक ढर था और सामने क़लम-दावात रखे थे। वे ध्यान-मग्न थे, चिंतन में डूबे थे।

आहट पा कर आंखें खोलीं, मुझे पहचाना और किंचित मुसकान के साथ पूछा, "कहो, कैसे आए?"

मैंने बैठते हुए उत्तर दिया, "यों ही। बहुत दिन से मुलाकात नहीं हुई थी। आप तो घर से बाहर निकलते ही नहीं हैं।"

वे बोले, "हां, भाई। मेरी तो दुनिया ही बदल गई। अब तो कहीं और लौ लग गई है। नाते सकल राम तें मनियत- तुलसीदास ने कहा है न? बस, वही स्थिति है।"

मैंने सकुचाते हुए कहा, "लेकिन लोग आपके बारे में कुछ और कहते हैं।"

मुस्कुराते हुए गरदन हिलाते-हिलाते वे बोले, "उन्हें कहने दो। मैं तो राग-द्वेष, निंदा-स्तुति, मान-अपमान से परे हो चुका हूं।"

मैंने हिम्मत करके पूछ ही लिया, "फिर भी, नौकरी छोड़ने का असली कारण क्या है, यह तो आप ही बतला सकते हैं। आपको आपत्ति न हो तो..."

रामसेवक बाबू ने आंखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद खोलकर मुझे घूरा और सहज भाव से बोले, "तुम पूछते हो तो बतलाये देता हूं। मैंने हनुमानजी के आदेश से नौकरी छोड़ दी।"

मैं विस्मित हुआ। विश्वास ही नहीं हुआ। पूछा, "क्या हनुमानजी ने आपको दर्शन दिये थे?" वे बोले, "हां भाई, एक रात सपने में हनुमानजी पधारे और कहने लगे-रे मूढ़, मतिमंद, जीवन क्यों व्यर्थ गंवा रहा है? छोड़ इस माया को। दफ़्तर में 'मीमो' लिखते-लिखते इस दुर्लभ नर-जीवन को क्यों नष्ट करता है? मूर्ख, राम-कथा लिख। - मैंने घबरा कर कहा- मेरे प्रभु, सो कैसे होगा? मैं मूर्ख हूं, विद्याहीन हूं। मुझमें मीमो लिखने, नक़ल करने, फ़ार्म भरने और कैफ़ियत देने से अधिक प्रतिभा है ही नहीं। हनुमानजी ने कहा-तेरी प्रतिभा का उदय होगा।

मेरा आशीर्वाद है। सभी कवि विनयपूर्वक ऐसा ही कहते हैं। तुलसी ने भी तो कहा था- 'काव्य विवेक एक नहीं मोरे, सत्य कहौं लिख कागद कोरे।' तू भी उठ और लिखने बैठ जा। मैंने हाथ जोड़ कर विनती की- भगवान आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। पर मैं लिखूंगा क्या? कितने ही महान कवियों ने, संतों और भक्तों ने रामकथा लिखी है। मैं क्या विशेष लिखूंगा? तब हनुमानजी ने मुझे समझाया- वत्स, हर कवि का अपना विवेक होता है, अपनी दृष्टि होती है। हर कवि अपने युग से प्रभावित होकर राम-कथा को नया रूप देता है। वाल्मीकि, तुलसी और भवभूति में क्या तू कोई अंतर नहीं पाता? तू भी लिख, अपने विवेक और बुद्धि से काम ले और कथा को युगानुकूल रूप दे। इतना कह कर हनुमानजी अंतर्धान हो गए। मैं बदल गया। सुबह दफ़्तर गया। चलते वक्त एक-दो बंडल 'मीमो के फ़ार्म' रामकथा लिखने के लिए थैले में डाल आया।"

मैंने रामकथा लिख डाली?

वे बोले-"हां, अब समाप्त ही हो रही है। सेतुबंध वाला प्रसंग अभी लिख कर पूरा किया है। सुनाऊं?"

मैंने कहा, "हां-हां क्यों नहीं? भला राम-चर्चा कौन नहीं सुनना चाहेगा?

रामसेवक बाबू ने पोथी खोली और एक अध्याय निकाला। पढ़ना प्रारंभ करने के पहले भूमिका बांधी, 'देखो भाई, मेरी कविता में कुछ नवीनता मिलेगी। तुम चौंकना मत और न ही अविश्वास करना। हनुमान जी सपने में कह गए हैं कि ग्रंथ पूरा होने पर मैं इस पर दस्तख़त कर दूंगा - 'एप्रूव्ड' करके। तब किसी को कोई शंका नहीं रहेगी। मैं तुम्हें रहस्य की बात बताता हूं - जिस पुल पर से राम लंका गये थे वह दूसरा पुल था। उसके पहले एक पुल और बन चुका था। उसी पुल की कथा है यह। अब सुनो।'

चश्मा पोंछ कर उन्होंने फ़िर लगाया और पढ़ने लगे-

"जब पुल तैयार हो गया, तब नल-नील रामचंद्र के पास आये और साष्टांग दंडवत कर खड़े हो गये। विनय की, प्रभु पुल बन कर तैयार हो गया है। राम ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। अभी तो मैंने उसका शिलान्यास किया है और जिनका शिलान्यास हो वे इतनी जल्दी नहीं बनता, बल्कि बनता ही नहीं है। जिन्हें बनाना होता है, उनका शिलान्यास नहीं होता और जिनका शिलान्यास होता है, वे बनाये ही नहीं जाते। मैं जब पहली बार गुरु वशिष्ठ के साथ भ्रमण करने निकला था तब कितने ही स्थानों पर मुझसे भवनों का शिलान्यास करवाया गया था।

पर मैं जब अभी पिता की आज्ञा से वनवास करने उस मार्ग से निकला, तो देखा कि वे शिलायें वैसी ही लगी हैं, निर्माण कभी आरंभ नहीं हुआ। पर तुमनें इतनी जल्दी कैसे बना लिया? मुझे तो आशा ही नहीं थी कि वह पुल बनेगा।"

नल-नील ने हाथ जोड़ कर विनय की,"प्रभो, सब आपकी कृपा का प्रासाद है। पुल तैयार है, सेना को आज्ञा हो।"

रामचंद्र ने सुग्रीव को बुला कर कहा, 'बंधु, पुल बन गया। नल-नील में अद्भुत क्षमता है। पर उसकी क्षमता भी क्या करती, यदि तुम धन से सहायता न करते। मैं तुम्हारा बहुत ही ऋणी हूं मित्र।'

सुग्रीव ने कहा, 'भगवान, ऐसी विनय आपको शोभा नहीं देती। आप इस विशाल आर्यभूमि के नरेश होंगे, मैं तो एक छोटे भू-भाग का स्वामी हूं। मेरा कोष आपके लिए काम आ रहा है, यह मेरे लिए गौरव की बात है।' 'तो बंधु, कल ही सेना को उस पार चलने का आदेश दो।

शेष पेज 8 पर